REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2023

कबीर काव्य की प्रासंगिकता

डॉ.कविता अरुण सोनवणे
ज्ञानदीप बहुउद्देशीय विद्याप्रसारक मंडल तामसवाली संचलित,
जूनियर आर्टस - साइंस कॉलेज, एवं माध्यमिक विद्यालय सार्वे- बाभले, पारोला, जि. जलगांव.

आज का युग आधुनिक तंत्रज्ञान का युग है। कोरोना की इस जागतिक महामारी ने तो पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया है।जिसके चलते महानगर से लेकर छोटे-से - छोटे ग्राम में भी कभी नहीं इतना ज्यादा प्रयोग तंत्रज्ञान का बढ़ गया है। आज सही मायने से सारा विश्व अधिकतर अपना काम मोबाइल कंप्यूटर आदि आधुनिक तंत्रज्ञान से ही कर रहा हैं। फिर चाहे वह काम शासकिय, प्रशासकिय शैक्षणिक कार्य हो यहाँ तक की सामाजिक शादी-विवाह जैसे कार्य भी आज तंत्रज्ञान के मदद से संपन्न हो रहे हैं।वर्तमान समय में विज्ञान एवं तंत्रज्ञान के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता नहीं है अपिंतु अब तंत्रज्ञान हमारी जरूरत बन गया है ।इस तंत्रज्ञान की मदद से तो मानव अन्य ग्रहों पर अपना आशियाना बनाने की चाह में है । सो इस भौतिकप्रधानता एवं प्रगतिवादी युग में ईश्वर के अस्तित्व,उसके प्रति आस्था, श्रद्धा... आदि को भी नकारा जा रहा है,ऐसे समय में सवाल यह उठता है कि, मध्यकालीन साहित्य को पढ़ने की आवश्यकता क्या है ?क्या इस साहित्य के अध्ययन से कुछ लाभ भी है ?क्या कबीरदास तथा अन्य प्राचीन कवियों को पढ़ने-पढ़ाने की,चर्चाए, संगोष्ठियाँ एवं वेबीनारों की आवश्यकता भी है? कौन और क्यों पढ़ेगा इनके साहित्य को? क्या कबीर का साहित्य प्रासंगिक है? भक्त कवियों के बारे में तो यह सवाल विशेष रूप से उठाए जाते हैं। क्योंकि उनके साहित्य में मुख्यता से भक्ति को ही निरूपित किया गया है।लेकिन उनका साहित्य ब्रह्मा, जगत, माया तथा भक्ति तक ही सीमित नहीं रहा है,अपितु उसके साथ-साथ आत्मानुभव स्वानुभूति व्यवहारिकता, सर्वधर्म समभाव,विश्वबंधुत्व, प्रेम...आदि कई उदात्त भावनाओं से भी जुड़ा है। वर्तमान कोरोना के आपातकालीन समय में और उनके बाद भी काम आने वाली कई बातों को उन्होंने अपने साहित्य से स्पष्ट किया है।इस दृष्टि से कबीर के विचार निर्विवाद रूप से प्रासंगिक ठहरते हैं।

कबीर साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार करने से पहले हम 'प्रासंगिकता' के संदर्भ में कुबेरनाथ राय पूर्ण 'मुकुट' के विचार जान ले।वे कहते हैं- "प्रासंगिकता के नाम पर साहित्य को केवल संवादिकता Journalism -पत्रकारिता की भंगिमा देने के प्रयास का में विरोधी हूँ। आज प्रासंगिकता से प्रतिबद्ध होकर साहित्य लिख–लिखा रहे हैं वे डॉक्यूमेंट्री या सांवदिक तथ्य परिवेशन को ही इसकी एकमात्र स्वीकृत विधा मान रहे हैं।..... प्रासंगिकता का एकरूप सार्वकालीन भी होता है, उसमें सार्वकालीन रूप से ही मूल्यबोध जुड़ा रहा है।"(1)

कबीर काव्य की प्रासंगिकता -

कबीरदास मध्यकालीन साहित्य के भक्ति आंदोलन के समुद्र मंथन में एक सशक्त क्रांतिकारी तथा समाज सुधारक के रूप में सर्वप्रमुख रहे हैं ।उन्होंने धर्म जाति,वर्ण-व्यवस्था से ऊपर उठकर रूढ़िवादी, अशिक्षित और अराजकता के दौर में भी धर्मोपासना की उन सभी पद्धतियों का खुलकर विरोध किया है।

आज के आधुनिक युग में भी मनुष्य जीवन में धर्म का अन्य साधारण महत्व है ।धर्म के नाम पर हम देखते हैं कि आज देश-विदेश में अशांति, युद्ध का माहौल बना है ।विशालकाय भारत देश में भी धर्म-जाति के नाम पर आए दिन दंगे-फसाद किए जाते हैं।उन्होंने धर्मोपासना कि उन समस्त कुरीतियों का विरोध किया है।कबीर कहते हैं-

"संतन जात न पूछो निरगुनियाँ
साधन ब्राह्मण साध छत्तरी,साधे जाति बनियाँ।
साधना माँ छत्तीस कौम है, टढ़ी तोर पुछनियाँ।
साधे नाऊ साधै धोबी,साध जाति है बरियाँ।
साधन माँ रैदास संत हैं,सुपच ऋषि सो भंगियाँ।
हिंदू-तुर्क हुई दीन बने हैंकुछ नहीं पहचानियाँ। "(2)

यहाँ आदर्श समाज के निर्माण के लिए जाति-धर्म, ऊंँच-नीच की भावना को मिटाकर समता, बंधुता तथा मानवता के उच्चतम भाव को विराजित करने का प्रयास। किया गया है। कबीर दास ने जाति-धर्म से परे मानवतावादी विचारधारा से मनुष्य जाति को प्रेरित कर उन्हें एकसूत्र में बांधने का कार्य किया है।

कबीर दास ना हिंदू थे और न मुस्लिम। मानवता से बढ़कर कोई धर्म वे मानते नहीं थे । इसलिए उन्हें जहाँ-कहाँ उन्हें धार्मिक आडंबर दिखाई दिया उन्होंने वहाँ प्रहार किया है। फिर चाहे हिंदुओं की मूर्ति पूजा हो या फिर मुस्लिम धर्म कीआजान' (प्रार्थना) हो उन्होंने दोनों पर एक साथ कटाक्ष साधा है । कबीर कहते हैं -

"पाथर पूजे हरि मिलै,तो मैं पूजा पहार।
ताते यह चाकी भली, जिन पीसो खाय संसार।।"
आगे मुस्लिम धर्म पर व्यंग कसते हुए वे कहते हैं
"काँकर पाथर जोरी के ,मस्जिद लयी चुनाय।
ता-चढि मुल्ला बाँग दे,क्या बहरा हुआ खुदाय।।'

कबीरदास के विचारों को समझने के बाद यह सवाल उठता है,क्या आज कोरोना जैसी भयानक महामारी में भी अयोध्या का भव्य-दिव्य मंदिर-बाबरी मस्जिद, धर्म-जाति को लेकर, चर्चा तथा पैसों का व्यय आवश्यक भी है?मूर्ति-पूजा,उपासना प्रार्थना आजान... आदि धार्मिक कर्मकांड के लिए तो मंदिर, मस्जिद,चर्च तथा गुरुद्वार...आदि के सारे(धार्मिक स्थलों के)दरवाजे बंद किए गए हैं ।कोरोना की इस परिस्थितियों में इन सब बातों की जरूरत नहीं हैं, अपितु लोगों को अच्छे सुविधायुक्त अस्पताल, स्कूल- कॉलेजेस और नव युवकों को रोजगार, काम- धंधों की आवश्यकता है यहाँ कबीर के विचार प्रासंगिक है।

आज का मनुष्य चमक-दमक के इतना आधीन हो गया है कि, धन- संचय और भौतिक सुख-सुविधाओं की पूर्ति में ही जीवन का आनंद मान बैठा है इसलिए वह दिनरात यंत्रवत होकर पैसे कमाने में ही लगा है ।धन संचय की इस स्वार्थ प्रवृत्ति पर निंदा करते हुए कबीर कहते हैं-

"कबीर सो धन संचिये जो आगे कुल होई,
सीस चढ़ाये पोटली ले जात न देख्या कोई।।"(3)

सच कहे तो कोरोना ने हर एक मनुष्य को जीवन और सुख की ओर नए दृष्टिकोण से देखने का, समझने का अवसर दिया है कोई कितना भी धनवान हो,उसके पास नाम-शोहरत भी हो फिर भी उसका अंतिम संस्कार एवं अंतिम दर्शन तक नहीं हो पा रहे हैं। फिर इस क्षणभंगुर जीवन के लिए व्यर्थ ही धन-संचय भला क्यों किया जाता है । इसलिए कबीर आगे कहते हैं कि -

"साईं इतना दीजिए,जा में कुटुंब समाय,
मैं भी भूखा ना रहूँ,साधु न भूखा जाय।"

अधिकाधिक धन-संचय के कारण व्यक्ति भोग और विलासांधता में डूब रहा है ।कुछ लोग नैतिक मूल्यों को अपने पैरों तले रौंद रहे हैं,तो कुछ लोग अनैतिक ढंग से धन प्राप्ति कर दानवीरता का प्रदर्शन भी करते हैं। इसलिए कबीर उन धनवानों एवं दानवीरों पर व्यंग कसते हुए कहते हैं कि,

"बड़ा भया तो क्या हुआ,जैसे पेड़ खजूर ।
पथिनकको छाव न लगे,फल लागे अति दूर।"

मनुष्य की श्रेष्ठता केवल धन से ही नहीं होती बल्कि उसके कर्मों से ही होती है यहाँ ऊँचे खजूर के पेड़ के उदाहरण से अमीर और दानशुरों पर निशाना साधते हुए यह संदेश कबीरदास ने देना चाहा है कि, संपत्ति की सार्थकता तभी है जब हम गरिबों,पीड़ित एवं रोगियों को वक्त पर सुविधा दे सके,मदद कर सके ।कबीर यहाँ सामाजिक दायित्व बोध को जगाना चाहते हैं, इसलिए दान को महत्व देते हुए सात्विक दृष्टि पर भी अधिक बल उन्होंने दिया है ।

कबीर लोकधर्मी थे ।आम आदमी की भावनाओं, पीड़ाओं से वे भली-भांँति परिचित है। इसलिए शोषक वर्ग को गरीबों तथा दुर्बलों को ना सताने का संदेश देते हुए कबीर कहते हैं कि

"दुर्बल को न सताइए,जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की स्वांस से, लोह भस्म हो जाय।।"(4)

अमीर-धनवान, ऊँचे कुल,धर्म-जाति के लोग अहंकार में मदांध हो जाते हैं, जिसमें वे निरपराध , निर्धन लोगों को पीसते रहते हैं ।सच तो मानवता का आधार उदात्त प्रेम है । समाज में पद (कुर्सी)तथा धन (पैसों) के आधार पर विषमता एवं संकुचित मानसिकता के दर्शन स्पष्ट रूप से होते हैं ।आज हम देखते हैं कि अमीर अधिक अमीर बनता जा रहा है और गरीब दिन-ब-दिन गरीब ही बनता जा रहा है ।जैसे कि हम देखते हैं और सुनते आए हैं कि,'पैसा पैसे को खींचता है' जिसके चलते आर्थिक विषमता बढ़ती ही जा रही है। निर्धन के पास लाख प्रतिभा होने क बावजूद भी ना उसे आदर मिलता है ना सम्मान मिलता है। इस स्थिति को बदलने के लिए कबीर साहित्य की उपादेयता सिद्ध होती है ।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है ।फिर भी मनुष्य है कीझूठा अहंकार, ईर्ष्या,द्वेष उपहास में डूबा रहता है और जीवन का आनंद- सुख ही भूल जाता है। इस सृष्टि पर कुछ भी चिरकाल नहींहै। इस क्षणभंगुर जीवन में गर्व करने जैसा कुछ भी नहीं है। सब कुछ क्षणिक है इसलिए यौवन पर टिप्पणी करते हुए

इस बात पर कटाक्ष साधते हुए कबीर कहते हैं -
"कबीर गरबु ना कीजिए,देही देखी सुरंग ।
आज काली जजि जाहुगे,ज्यो कांचोरी भुअंग।।"

आगे कबीरदास समय की उपादेयता पर बल देते हुए समय के साथ चलने का तथा निष्क्रियता की प्रवृत्ति को छोड़ कर्मवाद की ओर अग्रसर रहने का संदेश देते हुए वे कहते हैं कि

"काली करता अबहि, अब करता सुई ताल,
पाछे कछु ना हाइगा,जौ सिर पर आवै काल।।"

सच ही तो है, समय किसी के रोके नहीं रुकता। वह तो अबाध गति से चलता रहता है, बदलता रहता है ।आज भी हम देखे तो हर एक कामकाज की नीति, पद्धतियाँ बदल रही है,शिक्षा भी आज कल स्कूल-कॉलेजेस में नहीं अपिंतु ऑनलाइन (गूगल और झूम ऐप के माध्यम से दी जा रही है ।वक्त के साथ चलकर इस आधुनिक तंत्रज्ञान से अवगत होकर अध्ययन-अध्यापन का कार्य करना हमारा दायित्व है। साथ ही नवयुवकों को भी यह ध्यान देना आवश्यक है कि अत्याधुनिक तंत्रज्ञान के इस बाजार में हमें गुम नहीं होना है। हमें अपने पढ़ाई से भी दूर नहीं जाना है आज का काम कल पर छोड़ना नहीं है अपितु तत्क्षण उसे शुरू करना है पुरा करना है। परिस्थिति चाहे कितनी भी कठिन क्यों ना हो चिंता में डूब कर निष्क्रिय आलसी नहीं होना है। अपने लक्ष पर अड़िग रहना है। कबीरदास ने सहज सरल भाषा में कहा हैं कि-

"मन के हारे हार है,
मन के जीते जीत"

कोरोना का यह काला साया भी अवश्य हटेगा फिर से सुनहरा उजाला अवश्य आएगा यह समय भी निकल जाएगा।

अंत में यह कहना सटीक है कि-
"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,पंडित भया न कोई ।
ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होई।"

संदर्भ सूची :-

1) संपा. सुनील कुलकर्णी- संत साहित्य की आधुनिक अवधारणा, पृ-69.
2) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी- कबीर ,पद-पृ -27
3) संतबानी संग्रह- भाग -2 पृ-27
4) डॉ.दास - कबीर ग्रंथावली, परिशिष्ट- पद-10,पृ-130